

259398 - घुलनशील कागज़ पर रुक्या की आयतें लिखने का हुक्म

प्रश्न

मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या शुद्ध केसर से बनी खाने योग्य स्याही, या किसी अन्य प्रकार की खाद्य स्याही से कागज़ के एक टुकड़े पर रुक्या (दम) के लिए आयतुल-कुर्सी लिखना, फिर स्याही को पानी में घोलकर रोगी को पेय के रूप में देना जायज़ है? मैंने सुना है कि पूर्वज पानी के बर्तनों पर कुरआन की आयतें लिखते थे, फिर उन्हें पानी से धोते थे और फिर उन्हें बीमारों को पीने के लिए देते थे। इसके आधार पर, मैं एक ऐसा उत्पाद तैयार करना चाहता हूँ, जिसपर कुरआन की आयतें लिखी हों, ताकि उन्हें पानी में घोल कर पिया जा सके। मुझे पता है कि इब्ने बाज रहीमहुल्लाह ने उसके आधार पर जो इब्नुल-कथ्यिम रहिमहुल्लाह ने जादुल-मआद में उल्लेख किया है, इस बात को जायज़ क़रार दिया है। “मसारू इमोटो” नामक एक जापानी डॉक्टर द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार पाया गया कि पानी में ध्वनि कंपन के कारण जानकारी को बनाए रखने की क्षमता होती है, जैसे कि पानी पर सकारात्मक शब्द बोलना, जो पानी के अणुओं को संशोधित कर देता है, जैसे कि बिस्मिल्लाह कहना। यह भी पाया गया कि पानी के बर्तनों पर सकारात्मक शब्द लिखने का भी वही प्रभाव होता है। मैं इस नियम की मूल बातों (सिद्धांत) को कागज़ पर आयतें लिखने के बजाय, आयतें को धोने के अभ्यास पर लागू करना चाहता हूँ, ताकि दवा के रूप में पानी में घोल दिया जाए। मैं इस बात के अनुमेय होने के बारे में निश्चित नहीं हूँ। इसलिए मैं, इस विषय पर किसी भी सलाह (उपदेश) और इसके विपरीत किसी भी सबूत के लिए, आभारी रहूँगा।

विस्तृत उत्तर

कुरआन और नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की दुआओं के माध्यम से शिफा (आरोग्य) चाहना धर्मसंगत है। अल्लाह का फरमान है :

وَنَزَّلْ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا .

82 : الإسراء

"और हम कुरआन में से जो उतारते हैं वह ईमान वालों के लिए शिफा (आरोग्य) और दया है, लेकिन वह अत्याचारियों को घाटे ही में बढ़ाता है।" [सूरतुल-इस्मा : 82]।

यह उपचार कुरआन के पाठ के माध्यम से, तथा बीमार व्यक्ति पर पढ़ने के माध्यम से, पानी पर पढ़ने और उसे पीने तथा उससे स्नान करने के माध्यम से, तथा उसे बर्तन आदि में लिखकर और उसे जल से धोकर पीने के माध्यम से किया जाएगा, जैसा कि पूर्वजों के एक समूह से वर्णित है।

इब्नुल-क़य्यिम रहिमहुल्लाह ने ज़ादुल-मआद (4/170) में बुरी नज़र से रुक्खा के बारे में कहा :

“पूर्वजों के एक समूह का विचार है कि उसके लिए कुरआन की आयतें लिखी जाएँ, फिर वह उन्हें पी ले। मुजाहिद ने फरमाया : इसमें कोई हर्ज नहीं कि वह कुरआन लिखे और उसे धोकर बीमार आदमी को पिला दे। कुछ ऐसा ही अबू किलाबा से रिवायत है।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि : उन्होंने एक महिला के लिए जो बच्चा के जनने में कठिनाई का अनुभव कर रही था, कुरआन के कुछ शब्द लिखने, फिर उसे पानी से धोकर उसे पिलाने का निर्देश दिया।

अय्यूब ने कहा : मैंने अबू किलाबा को देखा कि उन्होंने कुरआन के कुछ शब्द लिखे, फिर उन्हें पानी से धोया और वह पानी एक आदमी को पिलाया जो किसी दर्द से पीड़ित था।” उद्घरण समाप्त हुआ।

इसे केसर आदि से किसी ऐसे काग़ज पर लिखने में कोई हर्ज नहीं है जो घुलने वाला हो, जब तक कि वह शुद्ध (पवित्र) है, चाहे वह हाथ से लिखा गया हो, या मशीन से, अगर वह नुकसान से मुक्त है।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक जानता है।